17 अगस्त, 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 45, अंक : 10
अगस्त (प्रथम), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की वसुंधरा पर अध्यात्म मेला....

45वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित तत्त्वप्रचार की गतिविधियों के अंतर्गत ४५वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दिनांक ३१ जुलाई से ७ अगस्त २०२२ तक अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर का शुभारम्भ ३१ जुलाई २०२२ को प्रात: जिनशासन ध्वज को श्री निहालचन्दजी, घेवरचन्दजी जैन ओसवाल परिवार, जयपुर के करकमलों से फेहराकर किया गया। यह समारोह अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मंगल सान्निध्य एवं कोटा के प्रसिद्ध उद्योगपति श्रीमान प्रेमचंदजी बजाज की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें श्रीमान रविजी जैन (आयुक्त जयपुर विकास प्राधिकरण) मुख्य अथिति के पद पर आसीन थे।

शिविर उद्घाटन श्री तन्मयजी-ध्याताजी एवं समस्त बजाज परिवार कोटा, मंच उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर एवं मण्डप उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा ने किया। भवन में स्थित पण्डित प्रवर टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री ब्रजसेनजी जैन दिल्ली द्वारा एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्री T.C. जैन सुपुत्र अभिषेक-समीक्षाजी जैन द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर, कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बसंतभाई मुंबई Online, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़, श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर, डॉ. विमलकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, श्री महावीरजी जैन, श्री शांतिलालजी गंगवाल, डॉ. श्रेयांशजी शास्त्री सिंघई, श्री त्रिलोकचंदजी, श्री हीराचंदजी वैद जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री आदि देश के विभिन्न स्थानों से पधारे श्रेष्ठी व विद्वानों का समागम रहा।

पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने सभा का संचालन किया एवं ट्रस्ट में संचालित गतिविधियों का परिचय दिया। मंगलाचरण पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री अलवर ने किया। **(शेष पृष्ठ 5 पर...)**

'भरत के अन्तर्द्वन्द्व' का तृतीय मंचन

६ अगस्त २०२२ को दोपहर में टोडरमल स्मारक भवन स्थित डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल प्रवचन मण्डप में 'भरत के अन्तर्द्वन्द्व' नामक नाटक उसके लेखक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर की साक्षात् उपस्थिति में रंगमंच पर मंचित किया गया।

नाटक के मंचन के पूर्व संचालक पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल ने बताया कि इस नाटक में डॉ. भारिल्ल ने भरत और बाहुबली के अपार प्रेम को दर्शाया है और समाज के समक्ष भरत के प्रति एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं कि इस भरत के व्यक्तित्व को मैंने गढ़ा है। दुनिया इसे भविष्य में '**हुकमचन्द के भरत**' के नाम से याद रखेगी। सभी ने नाटक के सन्देश को समझते हुए उसके प्रति प्रसन्नता व्यक्त की। अन्त में सभी एक ही पंक्ति गुनगुना रहे थे।

लड़ना नहीं है सीखना; नहीं लड़ना, सीखना है।
उलझना नहीं है सीखना; सुलझना सीखना है।।

41 सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

सम्यक्चारित्र का अन्यथा स्वरूप...

सच्चे धर्म की तो यह आम्नाय है कि जितने रागादि दूर हुए हों उसके अनुसार जिस पद में जो धर्मक्रिया संभव हो, वह सब अंगीकार करें। यदि अल्प राग मिटा हो तो निचले पद में ही प्रवर्तन करे; परन्तु उच्चपद धारण करके नीची क्रिया न करें।

यहाँ कोई कहे कि स्त्री सेवनादि का त्याग तो ऊपर की प्रतिमा में किया जाता है, तो निचली अवस्था में उसका त्याग करें या नहीं? उससे कहते हैं कि निचली अवस्था में जैसा त्याग सम्भव हो वैसा करना; परन्तु जिस निचली अवस्था में जो कार्य सम्भव ही न हो वह कैसे होगा? भूमिकानुसार योग्य क्रम से ही त्याग करना चाहिए; जैसे किसी ने सप्तव्यसन का त्याग तो किया नहीं हो और स्वस्त्री सेवन को छोड़ने की बात करे, शराब पीना तो छोड़े नहीं और अनछने जल का त्याग करे - इसप्रकार क्रम भंग करके त्याग करे तो मूर्ख ही कहलायेगा। सप्तव्यसन और शराब छोड़े बिना ये दोनों त्याग कैसे संभव हैं? अत: सर्व प्रकार से विचार कर जैसे वीतरागता की वृद्धि हो वैसे त्याग करें; क्योंकि वीतरागभाव होने पर ही सच्चा त्याग होता है।

शास्त्रों में चारित्र के पूर्व जो सम्यक् पद दिया है, वह अज्ञान की निवृत्ति के लिए है, जिसका तात्पर्य यह है कि तत्त्वज्ञान के बाद ही सच्चा चारित्र होता है। जिसप्रकार बीज बोये बिना अन्न की प्राप्ति नहीं होती, उसीप्रकार तत्त्वज्ञान के बिना सच्चा चारित्र नहीं होता और सच्चा तत्त्वज्ञान होने पर चारित्र होता ही है।

''ज्ञान कला जिनके घट जागी, ते जगमाहीं सहज वैरागी''

बिना ज्ञान के संयम लेने वालों के सम्बन्ध में **समयसार** के आधार से कहते हैं कि महाव्रतादि के भार से भग्न होते हुए वे संसार में परिभ्रमण करते हैं। **पंचास्तिकाय ग्रन्थ** में तेरह प्रकार का चारित्र होने पर भी व्यवहाराभासी का मोक्षमार्ग में निषेध कहा है। **प्रवचनसार** में आत्मज्ञान शून्य संयमभाव को अकार्यकारी कहा है।

यहाँ कोई ऐसा समझे कि बाह्य में तो अणुव्रत-महाव्रतादि साधते हैं, सो अंतरंग में परिणाम नहीं होंगे और पाप बंध भी होता होगा? उनसे पण्डितजी कहते हैं कि द्रव्यलिंगी मुनि अन्तिम ग्रैवेयक तक चले जाते हैं, पंचपरावर्तनों में देवायु की प्राप्ति अनन्तबार होना कहा है - ऐसे उच्चपद तो अंतरंग परिणाम पूर्वक महाव्रत पालने पर और महामंदकषाय होने पर ही होते हैं। इसलिए द्रव्यलिंगी के स्थूल अन्यथापना तो है नहीं, सूक्ष्म अन्यथापना होता है; क्योंकि उनकी उदासीनता द्वेष बुद्धिपूर्वक होती है।

यहाँ कोई कहे कि सम्यग्दृष्टि भी तो पर द्रव्यों को बुरा जानकर छोड़ते हैं। उनसे पण्डितजी कहते हैं कि सम्यग्दृष्टि जीव अपने राग भाव को बुरा जानते हैं, परद्रव्यों को बुरा नहीं जानते। रागभाव को छोड़ने में उसके कारणभूत परद्रव्य भी सहज ही छूट जाते हैं।

यहाँ कोई कहे कि परद्रव्य निमित्त तो हैं? इसका बहुत सुन्दर जबाव देते हुए टोडरमलजी कहते हैं कि परद्रव्य जबरन तो बिगाड़ करता नहीं, अपने भाव बिगड़े तब वह भी बाह्य निमित्त होता है, कभी-कभी तो उसके निमित्त हुए बिना भी भाव बिगड़ते हैं; इसलिए नियमरूप से निमित्त भी नहीं है। इसप्रकार परद्रव्य का दोष देखना मिथ्याभाव है।

शास्त्रों में तो अणुव्रत-महाव्रतादि को व्यवहार से चारित्र कहा है, उन्हें अंगीकार करने में क्या बुराई है? समाधान करते हुए कहते हैं कि जिसप्रकार हिंसादि पापकार्यों में अहंबुद्धि थी, उसीप्रकार अहिंसादि पुण्यकार्यों में अहंबुद्धि करता है। 'मैं जीवों को मारता हूँ, मै परिग्रहधारी हूँ' और 'मैं जीवों की रक्षा करता हूँ, मैं परिग्रह रहित हूँ' ये दोनों मान्यताएँ एक जैसी हैं, एक समान अपराध हैं। समयसार कलश में कहते हैं कि -

ये तु कर्तारमात्मानं पश्यन्ति तमसा तताः।
सामान्यजनवत्तेषां न मोक्षोऽपि मुमुक्षुतां।।

अर्थात् जो जीव मिथ्या अंधकार से व्याप्त होते हुए अपने को पर्यायाश्रित क्रिया का कर्ता मानते हैं, उन जीवों को मोक्षाभिलाषी होने पर भी सामान्य मनुष्यों के समान मोक्ष नहीं होता। देखो! जिनके हृदय में कर्तापना बैठा हो, उनके हृदय में धर्म कदापि नहीं हो सकता।

यहाँ कोई कहे कि शास्त्रों में तो चारित्र दो प्रकार का कहा गया है - सराग चारित्र और वीतराग चारित्र। पण्डित उदाहरण देते हुए कहते है कि जैसे चावल दो प्रकार को होता है - तुषसहित और तुषरहित। वहाँ तुष चावल का स्वरूप नहीं है, वह तो चावल का दोष है; परन्तु चावल के साथ होने से उसे भी चावल कह दिया जाता है। वैसे ही राग का नाम चारित्र नहीं है, वह तो चारित्र में दोष है; परन्तु वीतराग के साथ होते से उसे चारित्र कह दिया गया है।

फिर वह कहता है कि यदि ऐसा है तो जितने अंशों में राग घट गया है, उतने अंशों में वीतरागता कहो और जितने अंशों में सरागता है, उतने अंशों में मत कहो। पण्डितजी कहते हैं कि यदि तत्त्वज्ञान पूर्वक ऐसा हो तो योग्य ही है, अन्यथा उत्कृष्ट तप करने पर भी असंयम नाम ही पाता है। इसी बात का विस्तार करते है कि द्रव्यलिंगी मुनि राज्यादि छोड़कर निर्ग्रन्थ होते हैं, अट्ठाईस मूलगुणों का पालन करते हैं, शरीर के खण्ड-खण्ड हो जाने पर भी व्यग्र नहीं होते, व्रत भंग नहीं करते, विषयसुख की चाह नहीं रखते - यदि ऐसी उत्कृष्ट दशा न हो तो नौवे ग्रैवेयक तक कैसे जायें? ऐसा उत्कृष्ट आचरण होने पर भी शास्त्रों में उन्हें मिथ्यादृष्टि ही कहा है; क्योंकि अंतरंग में कहीं-न-कहीं उनके कषाय भाव बैठा हुआ है।

अब वह कहता है कि सम्यग्दृष्टि भी तो प्रशस्तराग का उपाय करते हैं? उससे कहते है कि जिसप्रकार किसी जीव को बहुत सज़ा मिली हो तो वह सज़ा कम करने के लिए उपाय करता है और सज़ा कम होने पर हर्षित भी होता है; लेकिन सज़ा को तो बुरा ही जानता है। उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि को बहुत कषाय होती हो तो कषाय कम करने के लिए अनेक उपाय करता है और कषाय कम होने पर हर्षित भी होता है; लेकिन अन्तरंग में कषाय को तो बुरा ही जानता है।

यहाँ कोई कहे कि असंयत सम्यग्दृष्टि से द्रव्यलिंगी मुनि की कषाय कम होती हैं; क्योंकि सम्यग्दृष्टि तो सोलहवें स्वर्ग तक जाते हैं और द्रव्यलिंगी मुनि नौवे ग्रैवेयक तक; इसलिए वे असंयत सम्यग्दृष्टि से तो अच्छे हैं? पण्डितजी कहते हैं कि सम्यग्दृष्टि ही श्रेष्ठ हैं; क्योंकि श्रद्धान की अपेक्षा से देखें तो सम्यग्दृष्टि को किसी-भी प्रकार की कषाय करने का अभिप्राय नहीं है और द्रव्यलिंगी को शुभकषाय करने का अभिप्राय है। द्रव्यलिंगी के कदापि गुणश्रेणी निर्जरा नहीं होती और सम्यग्दृष्टि के कदाचित् होती है; इसलिए सम्यग्दृष्टि मोक्षमार्गी है और द्रव्यलिंगी नहीं। शास्त्रों में तो द्रव्यलिंगी मुनि को असंयत और सम्यग्दृष्टि को उनसे श्रेष्ठ कहा है।

इसप्रकार सम्यक् चारित्र के अन्यथा स्वरूप को स्पष्ट किया। इतना विस्तृत वर्णन कर अंत में पण्डितजी कहते हैं कि शास्त्र बढ़ जाने के भय से यहाँ और अधिक नहीं लिखते। स्वयं गहराई से विचार कर इन मान्यताओं/प्रवृत्तियों को छोड़ना।

इसप्रकार केवल व्यवहाराभास के अवलम्बी मिथ्यादृष्टियों का निरूपण समाप्त हुआ। अब आगे निश्चय-व्यवहार दोनों नयों के आभास का अवलम्बन लेने वाले उभयाभासी मिथ्यादृष्टि का वर्णन करेंगे। **(क्रमशः)**

रक्षाबंधन पर आयोजित विशिष्ट कार्यक्रम

(१) जयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक ११ अगस्त २०२२ को रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय स्थित पंचतीर्थ जिनालय में रक्षाबंधन महापर्व की विशेष पूजन सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के रक्षाबंधन की घटना से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर प्रवचन प्रसारित हुआ।

(२) अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा रात्रि ८:०० बजे रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर रक्षा एवं बंधन के स्वरूप को स्पष्ट करने वाला विशिष्ट व्याख्यान सम्पन्न हुआ।

रक्षाबंधन का तीन प्रकार से अर्थ बतलाते हुए उन्होंने कहा कि १) ७०० मुनिराजों की **रक्षा** एवं बलि का **बंधन**, २) इस घटना को देखकर देव-गुरू-धर्म के प्रति **रक्षा** का **बंधन** अर्थात् संकल्प/नियम/प्रतिज्ञा का भाव, ३) विष्णुकुमार मुनिराज को **रक्षा** करने के भाव से भी विविध प्रकार के कर्मो से **बंधना** ही पड़ा। इसप्रकार **रक्षा करने का भाव भी बंधन** ही है। प्रवचन का Dr. Sanjeev Godha यूट्यूब चैनल के माध्यम से हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया।

ज्ञातव्य है कि १५ अगस्त २०२२ को टी.वी. के पारस चैनल पर रात्रि १० बजे देश के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जन-जन की स्वतंत्रता से कण-कण की स्वतंत्रता को उद्घोषित करने वाले व्याख्यान का लाभ मिला।

(३) शाश्वतधाम-उदयपुर : यहाँ प्रातःकाल रक्षाबंधन पूजन एवं लधु पंच परमेष्ठी विधान पण्डित अंकितजी शास्त्री के सहयोग से कराया गया। विधान के पश्चात् प्रो. प्रेमसुमनजी के मुख्यातिथ्य, पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना की अध्यक्षता के अतिरिक्त पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, श्री अगमजी जैन आदि की उपस्थिति में बालिकाओं द्वारा वात्सल्यमय नाटक की प्रस्तुति तथा विद्वज्जनों द्वारा उद्बोधन प्राप्त हुआ। संचालन सुश्री विपाशाजी शास्त्री उदयपुर ने किया। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर का रक्षाबंधन/वात्सल्य दिवस पर प्रासंगिक प्रवचन हुआ।

(४) नागपुर : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में महावीर विद्या निकेतन में रक्षाबंधन पर्व पर प्रातःकाल सामूहिक पूजन एवं तत्त्वज्ञान से युक्त अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस अवसर पर पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर एवं विदुषी प्रतीतिजी मोदी के व्याख्यानों का लाभ मिला।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन? (द्वितीय सूची)

सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर समाज के तत्त्वजिज्ञासु जीवों द्वारा प्राप्त आमंत्रणों के आधार पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। दिनांक १३ जुलाई २०२२ तक प्राप्त जानकारी के अनुसार निर्धारित सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है। २ अगस्त के अंक में भी एक सूची प्रकाशित की जा चुकी है।

विशेष विद्वान – (1) डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल : कोलकाता, **(2) बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' :** सोनागिर, **(3) बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी :** सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखरजी, **(4) पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी :** उज्जैन, **(5) बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री :** दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट), **(6) ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री :** बैंगलोर, **(7) पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन :** हिम्मतनगर, **(8) पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री :** अशोक नगर, **(9) पण्डित प्रदीपजी झांझरी :** दिल्ली (विश्वास नगर), **(10) डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील :** नागपुर, **(11) डॉ. संजीवकुमारजी गोधा :** औरंगाबाद, **(12) पण्डित सुनीलजी जैनापुरे :** राजकोट, **(13) पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री :** वस्त्रापुर (अहमदाबाद), **(14) डॉ. दीपकजी शास्त्री :** भोपाल (चौक), **(15) पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन :** मोरवी, **(16) पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर :** विभिन्न स्थान।

विदेश – (1) पण्डित शैलेशभाई शाह तलौद : लन्दन, **(2) पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा :** शिकागो, **(3) पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री जयपुर :** अमेरिका (मोना–online), **(4) पण्डित नीलेशभाई मुम्बई :** नैरोबी, **(5) पण्डित नितेशजी शास्त्री बासवाँड़ा :** दुबई।

मध्यप्रदेश प्रान्त – (1) ग्वालियर (सोडा का कुआँ) : पण्डित अरूणजी मोदी सागर, **(2) खनियांधाना :** पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, **(3–4) भिण्ड (देवनगर)** पण्डित विनोदजी जैन जबेरा, पण्डित अभिनयजी शास्त्री, जबलपुर, **(5) सिलवानी :** पण्डित संयमजी शास्त्री खनियांधाना, **(6) द्रोणगिरि :** पण्डित समर्थजी शास्त्री हरदा, **(7) गुना (महावीर जिनालय) :** पण्डित प्रांजलजी शास्त्री आरोन, **(8–10) सोनागिर :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. विनोदजी चिन्मय विदिशा, डॉ. मुकेशजी तन्मय विदिशा, **(11) जावरा :** पण्डित आप्तजी शास्त्री दमोह, **(12) शहडोल :** पण्डित दुर्लभजी शास्त्री गुढ़ाचन्दजी, **(13) शिवपुरी (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पण्डित सुरेशजी शास्त्री शिवपुरी, **(14) शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, **(15) शहापुर (बुरहानपुर) :** पण्डित अमनजी शास्त्री सिंघई, **(16) गौरझामर :** पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री फुटेरा, **(17) गौरझामर (नयापुरा–चन्द्रप्रभ जिनालय) :** पण्डित राजेशजी जबलपुर, **(18) रांझी (जबलपुर) :** पण्डित सुष्मितजी शास्त्री सेमारी, **(19) कोलारस :** पण्डित सुरेशचन्दजी टीकमगढ़, **(20–23) निसईजी :** डॉ. सरसजी विदिशा, डॉ. रतनलालजी होशानाबाद, पण्डित सुधीरजी जैन, विदुषी पुष्पाजी होशानाबाद, **(24) करेली :** पण्डित ज्ञाताजी सिंघई सिवनी, **(25) अम्बाह :** पण्डित पदमचन्द्रजी कोटा, **(26) सनावद :** पण्डित जिनचन्दजी शास्त्री हेरले, **(27) दलपतपुर :** पण्डित सोहमजी शास्त्री शाह सोलापुर, **(28) केसली :** पण्डित सत्येन्द्रजी शास्त्री मौ, **(29) इन्दौर (ग्रेटर ब्रजेश्वरी) :** पण्डित लालारामजी आशोकनगर, **(30–31) विदिशा (अरिहंत विहार) :** ब्र. सुधाबहनजी उभेगाँव, विदुषि समयसत्यप्रधानजी शास्त्री **(32) इन्दौर (कालानी नगर) :** पण्डित पदमचन्दजी गंगवाल, **(33) खैरागढ़ :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री भोपाल, **(34) पंधाना :** पण्डित अमनजी शास्त्री ग्वालियर, **(35) अमायन :** पण्डित रमेशचन्दजी लवाण, **(36) अभाना :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री सागर, **(37) डबरा :** पण्डित अक्षतजी शास्त्री निम्बाहेडा, **(38) जबेरा :** पण्डित हितंकरजी शास्त्री उदयपुर।

राजस्थान प्रान्त – (1) उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल) : पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, **(2) अलवर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, **(3) अजमेर (वीतराग–विज्ञान भवन) :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, **(4) उदयपुर (नेमिनगर) :** पण्डित गजेन्द्रकुमारजी शास्त्री, **(5) उदयपुर (गायरीयावास) :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, **(6) भीलवाडा (अजमेरों की गोठ) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री मडदेवरा, **(7) लूणदा :** पण्डित वैभवजी शास्त्री सागर, **(8) कुशलगढ़ (शान्तिनाथ मंदिर) :** पण्डित अशेषजी शास्त्री विदिशा, **(9–10) पीसांगन :** पण्डित सहजजी शास्त्री छिन्दवाडा, पण्डित आर्जवजी शास्त्री विदिशा, **(11) विजय नगर :** पण्डित अखिलजी शास्त्री जयपुर, **(12) साकरोदा :** पण्डित रितेशजी शास्त्री जयपुर, **(13) कुरावड :** पण्डित नमनजी शास्त्री हटा, **(14) लवाण :** पण्डित हर्षितजी शास्त्री दमोह, **(15) वल्लभनगर :** पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री सागर, **(16) कोटा (सन्मति संस्कार संस्थान) :** पण्डित सफलजी शास्त्री ज्ञानोदय, **(17) अलीगढ़ :** पण्डित विमलचन्द्रजी शास्त्री लाखेरी, **(18) जयपुर (सेठी चैत्यालय) :** पण्डित समकितजी शास्त्री जयपुर, **(19) डूँगरपुर :** पण्डित पुष्पजी शास्त्री आगरा।

उत्तरप्रदेश प्रान्त – (1) मैनपुरी : पण्डित आदित्यजी शास्त्री फुटेरा, **(2) ललितपुर (सीमंधर जिनालय) :** विदुषी प्रमिलाजी इन्दौर, **(2) ललितपुर (शीतलनाथ जिनालय) :** पण्डित नयनजी शास्त्री शाह, **(3) :** पण्डित नेमिचन्दजी ग्वालियर, **(4) भौगाँव :** पण्डित सोमिलजी शास्त्री दलपतपुर, **(5) खतौली :** पण्डित संजयजी शास्त्री खनियांधाना, **(6) करहल :** पण्डित महेन्द्रकुमारजी अमायन, **(7) सहारनपुर :** पण्डित संयमजी शास्त्री देशमाने, **(8) खेकड़ा :** पण्डित चन्दूलालजी कुशलगढ़, **(9) सुल्तानपुर :** पण्डित अरिहंतजी शास्त्री किनीकर, **(10) महरौनी :** पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर, **(11) अच्छनेरा :** पण्डित अमनजी खनियांधाना।

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

(पृष्ठ 3 का शेष...)

श्री नियमसार महामण्डल विधान

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री नियमसार महामण्डल विधान का आयोजन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर एवं पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा के निर्देशन में पण्डित जिनेंद्रजी शास्त्री, पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुआ।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता

शिविर व विधान के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती कुसुमजी-महेन्द्रजी गंगवाल सुपुत्र राहुलजी विनीतजी गंगवाल परिवार, जयपुर के अतिरिक्त शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमान प्रेमचन्दजी सुपुत्र तन्मयजी, ध्याताजी बजाज परिवार कोटा, श्रीमान अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्रीमान प्रदीपजी सुपुत्र तिलकजी अरिहन्तजी चौधरी परिवार किशनगढ़, श्रीमती रेखा संजयजी सुपुत्र तीर्थेशजी सुपुत्री मोक्षा दीवान सूरत, श्रीमती शशिजी-सुरेशजी जैन शिवपुरी व श्रीमती श्रीजी-अश्वनीजी एवं सुपुत्री अनिका जैन दिल्ली तथा विधान के आमंत्रणकर्ता पण्डित शिखरचन्दजी संजयजी जैन विदिशा, श्रीमती कविताजी-प्रकाशचन्दजी छाबड़ा सूरत, श्रीमान हेमचन्दजी एवं सुपुत्र वरुणकुमारजी जैन रेवाडी व श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर जयपुर रहे।

शिविर में प्रवचनों की शृंखला

प्रातःकाल डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अरिहंत चैनल के माध्यम से प्रवचनसार विषय पर प्रवचन प्रसारण एवं आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के इष्टोपदेश विषय पर सी.डी. प्रवचन के उपरांत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के तत्त्व-चिन्तन विषय पर सारगर्भित व्याख्यानों का लाभ मिला।

दोपहर में बाबू युगलकिशोरजी, कोटा एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर के वीडियो प्रवचन एवं पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रथमानुयोग की प्रेरणास्पद कथाओं के पश्चात् प्रवचनों के क्रम में डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित दीपकजी शास्त्री वैद्य, पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड एवं अमनजी शास्त्री लोनी के अतिरिक्त आमंत्रित विद्वानों के व्याख्यान सम्पन्न हुए।

रात्रि में प्रथम प्रवचन के अन्तर्गत बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित धर्मेंद्रजी शास्त्री कोटा व डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री बाँसवाडा एवं द्वितीय प्रवचन पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर व पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली द्वारा सम्पन्न हुए।

शिविर में संचालित कक्षाएँ

प्रतिदिन बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा छहढाला, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली द्वारा क्रमबद्धपर्याय, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील द्वारा दृष्टि का विषय (समयसार गाथा ६-७), डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा नयचक्र (निश्चय-व्यव्हार), पण्डित राजकुमारजी शास्त्री व पण्डित धर्मेंद्रजी शास्त्री द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा पंचभाव, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ व पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री द्वारा सल्लेखना अधिकार (रत्नकरण्ड श्रावकाचार), डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया द्वारा परीक्षामुख, डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री द्वारा गुणस्थान विषय पर रहीं।

पंचकल्याणक का मंगल आमंत्रण

३ अगस्त २०२२ को प्रातःकाल डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि विद्वानों की उपस्थिति में ढाईद्वीप जिनालय के मंगल आमंत्रण हेतु सभा संगठित की गई। बाल ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा मंगलाचरण के उपरान्त श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने ढाईद्वीप की विस्तृत योजना एवं उसकी कार्यशैली से सभा को परिचित कराया अंत में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी ने उपस्थित जनसमुदाय को पंचकल्याणक में पधारकर अपने जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा देते हुए मंगल आमंत्रण प्रेषित किया। अंत में डॉ. ने भारिल्ल अपने उद्बोधन में ढाईद्वीप पंचकल्याणक से पूर्व वहां पहुँचकर अपनी देखरेख में सभी कार्य करने का आश्वासन दिया।

समापन समारोह

०७ अगस्त २०२२ को प्रातःकाल समापन समारोह में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने शिविर में पधारकर अपना बहुमूल्य समय देने वाले विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त किया एवं उनके द्वारा किए जा रहे प्रचार-प्रसार के कार्यों की अनुमोदना की।

शिविर की सफलता में पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

ज्ञातव्य है कि इस आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के माध्यम से विगत ८ दिनों तक अध्यात्म की गंगा बहाई गई, जिसमें प्रतिदिन १४ घंटे तत्त्वजिज्ञासु जीवों को धर्म के स्वरूप को समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जैन समाज के लगभग २५ विद्वानों द्वारा जैन धर्म के विविध रोचक विषयों को कक्षाओं एवं व्याख्यानों के माध्यम से समझाया गया, जिसमें हजारों शिविरार्थी तत्त्वज्ञान से लाभान्वित हुए। संपूर्ण कार्यक्रम का लाइव प्रसारण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के यूट्यूब चैनल PTST पर किया गया।

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पहला अध्याय

(रेखता)

अरे कर जोड़ खड़े थे भरत हृदय में उमड़े भाव अनन्त।
उन्हें लख ऐसा जग को लगा आ गया उनके भव का अन्त।।
आ गया उनके भव का अन्त उन्हें आया आनन्द अनन्त।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द उन्हें आया आनन्द अनन्त।।16।।

भरत को अपने मन ही मन हो रहा था अद्भुत आभास।
सहज उनके मुखमण्डल पर छा गया अन्तर का उल्लास।।
उल्लसित भक्ति से जब भरत स्वयं की शक्ती लगा अशेष।
ऋषभ के चरणों में हो विनत स्तुति करने लगे विशेष।।17।।

अरे रे ऋृषभ देव भगवान! आपने पाया केवलज्ञान।
किया चारित्रमोह का नाश अरे पाया आनन्द महान।।
आपके बीते रागरु द्वेष वीतरागी हो गये विशेष।
वीतरागी सर्वज्ञ जिनेश दिया जग को हितकर उपदेश।।18।।

घातिया कर्म किये चकचूर अरे हो तुम देवों के देव।
अरे अरहन्त दशा को प्राप्त आप हो गये जिनेश्वर देव।।
आपकी सेवा में नित रहें उपस्थित अरे हजारों देव।
आपकी महिमा अपरम्पार स्वयं में लीन सदा स्वयमेव।।19।।

अनन्ते गुण राजित जिनदेव विराजे समोशरण के बीच।
आपकी शोभा अपरम्पार विराजे शत इन्द्रों के बीच।।
प्रसारित दिव्यध्वनि हो रही हो रहा हितकारी उपदेश।
अरे रे कान लगाकर भव्य सुन रहे परमतत्त्व उपदेश।।20।।

आपने कहा – अनन्तानन्त गुणों का पिण्ड आतमाराम।
न इसकी आदि है न अन्त अनादिनन्त आतमाराम।।
शान्ति का सागर सुख का कन्द स्वयं में ही पूरण स्वाधीन।
स्वयं से बाहर निकले नहीं स्वयं में ही है अन्तर्लीन।।21।।

स्वयं में अपनेपन के साथ यदि हो अपने में ही लीन।
और अपने में ही जम जाय सहज हो अपने में तल्लीन।।
सहज सुख–शान्ति प्राप्त हो सहज आत्मा अपने में लवलीन।
सहज हो आतम आतमराम मुक्ति पा हो पूरण स्वाधीन।।22।।

आतमा के साधक सब जीव मुक्ति में जाना चाहें सभी।
जिनेश्वर देव आपके भक्त मुक्ति को पाना चाहें अभी।।
अरे मुक्ति में परमानन्द भोगते रहें अनन्ताकाल।
उन्हीं को कहते हैं सब सिद्ध उन्हीं को सदा नवावें भाल।।23।।

अरे यह भरत आपका भगत आपके चरणों में रख शीश।
नमन करता है बारम्बार प्राप्त करना चाहे आशीष।।
आतमा में ही मेरा चित्त निरन्तर रमा रहे जिनदेव।
और कुछ नहीं चाहिये मुझे आप से हे देवों के देव! ।।24।।

आपने बतलाया जिनदेव अरे जो जैनधर्म का मर्म।
अरे सौ–सौ इन्द्रों के बीच कहा है अयाचीक[1] जिनधर्म।।
अरे जो होते ज्ञानी जीव जानते हैं वे वस्तुस्वरूप।
नहीं होती भोगों की चाह जानते हैं वे अपना रूप।।25।।

सभी का अपने में अपनत्व सभी का अपने में स्वामित्व।
सभी अपने–अपने कर्त्ता और सब अपने ही भोक्ता।।
किसी का कोई कुछ ना करे सभी हैं अपने में स्वाधीन।
किसी से लेना–देना नहीं सभी हैं अपने में लवलीन।।26।।

अरे अपनापन अर ममता और कर्त्ता–भोक्तापन सभी।
सभी कुछ अपने में ही रहें सभीकुछ भिन्न–भिन्न हैं अभी।।
यद्यपि एक क्षेत्र में रहें मिलें न कोइ किसी से कभी।
अरे वे यहाँ वहाँ ना कहीं रहें बस अपने में ही सभी।।27।।

जिनेश्वर देव आप भीकभी किसी का कुछ भी करते नहीं।
सभी गुण–पर्यायों के साथ सभी द्रव्यों को जानें सही।।
आज तक हुआ उसे जानें और होगा उसको जानें।
सभी की रग–रग पहिचानें और अपने को भी जानें।।28।।

स्वयं को तन्मय हो जानें और पर को केवल जानें।
स्वयं में अपनापन भी रहे किन्तु पर को बस पर जानें।।
स्वयं को अपनेपन[2] के साथ जानने को कहते परमार्थ।
स्वयं को अपनेपन के बिना जानने को कहते व्यवहार।।29।।

१. नहीं माँगने रूप, २. मैं यही हूँ –ऐसी मान्यतापूर्वक (क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला

20 समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न : बुद्धि कितने प्रकार की होतीं हैं? नाम बताइए।

उत्तर : बुद्धि चार प्रकार की होतीं हैं –

१) अहंबुद्धि(एकत्वबुद्धि) २) ममत्त्वबुद्धि(स्वामित्वबुद्धि)

३) कर्तृत्वबुद्धि ४) भोक्तृत्वबुद्धि

प्रश्न : अहंबुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : पर पदार्थों में **यही मैं हूँ** – इसप्रकार की मान्यता को अहंबुद्धि कहते हैं।

प्रश्न : ममत्त्वबुद्धि बुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : पर पदार्थों में **ये मेरे हैं मैं इनका हूँ** – इसप्रकार की मान्यता को ममत्त्वबुद्धि कहते हैं।

प्रश्न : कर्तृत्व बुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : मैं पर पदार्थों का कर्ता हूँ, ये मेरे कर्ता है – इसप्रकार की मान्यता को कर्तृत्व बुद्धि कहते हैं।

प्रश्न : भोक्तृत्व बुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : मैं पर पदार्थों का भोक्ता हूँ, ये मेरे भोक्ता है –इसप्रकार की मान्यता को भोक्तृत्वबुद्धि कहते हैं।

प्रश्न : यह जीव कब-तक अज्ञानी रहता है?

उत्तर : जब-तक जीव की कर्म, नोकर्म और कर्म के उदय में होने वाले विकारी भावों में अहंबुद्धि, ममत्त्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि रहती है। तब-तक जीव अज्ञानी रहता है।

प्रश्न : जीव ज्ञानी कब होता है?

उत्तर : जब यह जीव कर्म, नोकर्म और कर्म के उदय में होने वाले विकारी भावों में अहंबुद्धि, ममत्त्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि नहीं रखता है; किन्तु मात्र उन्हें जानता है, तो वह ज्ञानी होता है।

प्रश्न : भेदविज्ञान का मूल किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर : आत्मानुभूति को भेद-विज्ञान का मूल कहा गया है; क्योंकि भेदविज्ञान के बिना आत्मानुभूति की प्राप्ति नहीं होती।

प्रश्न : जीव को पौद्गलिक कर्मों का कर्ता किस नय से कहा जाता है?

उत्तर : अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय से।

प्रश्न : जीव को अशुद्धभावों का कर्ता किस नय से कहा जाता है?

उत्तर : अशुद्ध निश्चयनय से।

प्रश्न : जीव को शुद्धभावों का कर्ता किस नय से कहा जाता है?

उत्तर : शुद्ध निश्चयनय से। **(क्रमशः)**

वागड़ कहान स्नातक व साधर्मी सम्मेलन

कूपड़ा (बाँसबाड़ा) : यहाँ ध्रुवधाम में दिनांक ७ अगस्त २०२२ को वागड़ कहान स्नातक व साधर्मी मिलन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सर्वज्ञदेव विधान पण्डित अश्विनजी शास्त्री, नौगामा तथा पण्डित सचिनजी शास्त्री, गढ़ी के विधानाचार्यत्व में किया गया। डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री के श्री सर्वज्ञदेव विधान की विषय-वस्तु पर प्रवचन एवं आध्यात्मिकसत्पुरूष श्री कानजीस्वामी के इष्टोपदेश ग्रंथ पर आधारित प्रवचन के पश्चात् सम्मेलन में पधारे वागड़ क्षेत्र के २५ शास्त्री विद्वानों का स्वागत किया गया। बालकों ने स्वागत गीत और नृत्य प्रस्तुत किया।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महीपालजी ज्ञायक ने इसप्रकार के कार्यक्रम संस्था में निरंतर चलते रहने की भावना व्यक्त की। कार्यक्रम में विधान आयोजनकर्ता पण्डित मनोजजी जैन शाह, परतापुर तथा संयोजक पण्डित रीतेशजी शास्त्री, बाँसवाड़ा रहें।

(पृष्ठ 4 का शेष...)

महाराष्ट्र प्रान्त – (1-3) सांगली : पण्डित महावीरजी पाटील दानोजी, पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री कोल्हापुर, पण्डित नितिनजी शास्त्री कोठेकर सांगली, **(4-5) हिंगोली :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री कोटा, पण्डित अमोलजी शास्त्री मुम्बई, **(6) फालेगाँव :** पण्डित सौरभजी शास्त्री कालेगोरे, **(8) विहीगाँव :** पण्डित सम्मेदजी पाटील, **(9) सोलापुर (आदिनाथ जिनालय) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इंदौर, **(10) वरुड :** पण्डित श्रीवर्धनजी पाटील जयपुर, **(11) पंढ़रपुर :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, **(12) बालचन्द नगर :** पण्डित दर्शनजी पाटील जयपुर, **(13) चिखली :** पण्डित प्रिन्सजी शास्त्री, **(14) डासाला :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, **(15-16) सोलापुर (बुवणे मंदिर) :** पण्डित विजयजी कालेगोरे, पण्डित रवीन्द्रजी काले।

गुजरात प्रान्त – (1) अहमदाबाद (ओढव) : पण्डित सक्षमजी शास्त्री ललितपुर, पण्डित द्रव्यजी शास्त्री जयपुर **(2) रखियाल :** पण्डित दिलीपजी वाकलीवाल **(3) रोहतक (मॉडल टाउन) :** पण्डित मंयकजी शास्त्री बण्डा, **(4) सूरत :** पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड।

अन्य प्रान्त – (1-2) बेलगांव : पण्डित कैलाशचन्दजी अचल, पण्डित आकाशजी शास्त्री मौ, **(3-4) कोलकाता :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित अमितजी शास्त्री कोलकाता, **(5-6) सन्मति नगर :** पण्डित प्रथमजी शास्त्री, पण्डित अर्पितजी देवरान, **(7) दिल्ली (शिवाजी पार्क) :** पण्डित संयमजी शास्त्री गुढ़ाचन्द्रजी, **(8) दिल्ली (राजेन्द्र नगर) :** पण्डित शुभमजी गढ़ाकोटा, **(9) दिल्ली (रोहिणी से. १३) :** पण्डित नितिनजी मड़देवरा, **(10) दिल्ली (नांगलोई) :** पण्डित मंयकजी शास्त्री बण्डा, **(11) दिल्ली (दिल्ली केन्ट) :** पण्डित ध्रुवजी शास्त्री शिवपुरी, **(12) दिल्ली (प्रहलाद नगर) :** पण्डित संयमजी शास्त्री शाह, **(13) दिल्ली (पाण्डव नगर) :** पण्डित सम्यकजी अमरमऊ।

डॉ. भारिल्ल विरचित वैराग्य काव्य पर पीएच.डी.

मुम्बई निवासी श्रीमती गुणवंती बेन शाह ने अपने पी.एच.डी. शोध विषय के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर द्वारा विरचित वैराग्य नामक महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय समालोचनात्मक अध्ययन विषय को चुना है। वे मुम्बई स्थित सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय में धर्म अध्ययन संस्थान के अन्तर्गत जैन अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी के निर्देशन में शोध कार्य करेंगी।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के जीवन और सत्साहित्य पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से तीन पीएच.डी. (शोध कार्य) की जा चुकीं हैं।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों का सुयश

जयपुर शहर में १० अगस्त २०२२ को देश की आजादी के ७५वें अमृत महोत्सव वर्ष के अवसर पर जवाहर कला केंद्र में आयोजित हर घर तिरंगा नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता के अन्तर्गत जयपुर स्तरीय विभिन्न महाविद्यालयों की प्रस्तुतियों के मध्य श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की ज्ञाता कक्षा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान एवं पुरस्कार स्वरूप ५००० रूपये की राशि प्राप्त की; एतदर्थ हार्दिक शुभकामनाएँ।

ज्ञातव्य है कि नुक्कड़ नाटक की यह प्रतिभाशाली टीम मार्च २०२२ में संस्कृत और राजस्थान विश्वविद्यालय में भी भाग लेकर विजेता बन चुकी है।

महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के अन्तर्गत...

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों में तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक ३० जुलाई २०२२ को **देव-शास्त्र-गुरू : एक विहंगावलोकन** के अन्तर्गत **'समयसार जिनदेव है'** विषय पर जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में देव के स्वरूप को स्पष्ट करने वाली गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. विमलकुमारजी शास्त्री जयपुर ने की। निर्णायक के रूप में डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा रहे। गोष्ठी का संचालन पुष्प जैन आगरा व सम्मेद पाटील कोल्हापुर एवं मंगलाचरण विनम्र जैन हीरापुर ने किया। श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में उपाध्याय वर्ग से आर्जव गोधा जयपुर एवं शास्त्री वर्ग से अमन जैन दमोह व सिद्धांत उपाध्याय सांगली चुने गए।

अन्त में आभार प्रदर्शन महाविद्यालय के उप-प्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, जयपुर ने किया।

ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर में होने वाले ऐतिहासिक, आदर्श पंचकल्याणक के सम्बन्ध में

ढाईद्वीप इंदौर की धरा पर होने वाले पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की पूर्व भूमिका स्वरूप दिनांक ३१ अगस्त २०२२ को होने वाले कार्यक्रम की मीटिंग ढाईद्वीप में रखी गई, जिसमें इंदौर सकल दिगंबर जैन समाज के समस्त मंदिर के पदाधिकारीगण, श्रेष्ठी वर्ग, शास्त्री विद्वान आदि सम्मिलित हुए।

सभी ने इस भव्य आदर्श ऐतिहासिक पंच कल्याणक महोत्सव को सम्पन्न कराने के लिए अपने-अपने सुझाव एवं सहयोग की भावनाएँ व्यक्त कीं। मीटिंग की अध्यक्षता जयपुर से पधारे डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा की गई।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैनद्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।
यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com
प्रकाशन तिथि : 13 अगस्त 2022

प्रति,